DR. SUMAN LAL RAY
Guest Assistant Professor
Deptt. of Sanskrit
SRAP College Barachakia
BRABU-Muzaffarpur

B.A. (Hons.) Part — III
Subject — Sanskrit
Paper — VI

6×5=30 Marks

समासप्रकरणे सूत्रव्याख्या

4. द्विगुश्च — यह संज्ञासूत्र है। द्विगु समास की भी तत्पुरुष संज्ञा होती है — यह सूत्रार्थ है। 'संख्यापूर्वो द्विगुः' से संख्यापूर्वक समास को द्विगु संज्ञा प्रदान की गयी है। कैयटजी की सम्मति है कि 'संख्यापूर्वो द्विगुः' में 'च' जोड़ देने से द्विगु और तत्पुरुष दोनों संज्ञाओं का विधान हो जायेगा। अतः प्रकृत सूत्र अनावश्यक है किन्तु आचार्य पाणिनि ने 'द्विगुश्च' पृथक् लिखकर अपनी दूरदर्शी प्रतिभा का परिचय दिया है। द्विगु की तत्पुरुष संज्ञा करने का विशेष प्रयोजन है और वह है — समासान्त टच् प्रत्ययों का विधान। जैसे — पञ्चराजम्। अतः द्विगु समास पृथक् परिगणित होते हुए भी प्रकृत सूत्र से तत्पुरुष संज्ञक है।

5. द्वितीयाश्रितातीतपतितगतात्यस्तप्राप्तापन्नैः — यह विधिसूत्र है। द्वितीयान्त सुबन्त श्रित, अतीत, पतित, गत, अत्यस्त, प्राप्त और आपन्न — इन समर्थ सुबन्तों के साथ विकल्प से समास होता है और वह समास तत्पुरुष संज्ञक होता है। उदाहरणार्थ — 'कृष्णं श्रितः' इस विग्रह में 'कृष्ण अम् श्रित सु' ऐसी स्थिति में द्वितीयान्त सुबन्त 'कृष्ण अम्' का प्रकृत सूत्र से श्रित के साथ समास होता है। समास होने पर प्रातिपदिक संज्ञा, विभक्ति लोप, उपसर्जन संज्ञा तथा उसका पूर्वप्रयोग होकर 'कृष्णश्रित' रूप होता है। एकदेशविकृतन्यायेन 'कृष्णश्रित' की पुनः प्रातिपदिक संज्ञा, प्रथमैकवचने सु विभक्ति, अनुबन्ध लोप तथा अवशिष्ट स् को रुत्व-विसर्ग होकर 'कृष्णश्रितः' रूप सिद्ध होता है।

——— 0 ———